International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 25-06-2023, Accepted: 10-07-2023, Published: 26-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 34-35

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और पर्यावरणः एक अध्ययन

पवन कुमार
UGC-NET JRF, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान, IGNOU, Dehli, India

सारांश
ईक्कीसवीं शताब्दी के पहले से राजनीतिक नेताओं, सरकारी अफसरों, वैज्ञानिकों, उद्योगपत्तियों तथा विश्व की सभ्य सम्पूर्ण पीढ़ी के लिए 'पर्यावरण की सुरक्षा की आवश्यकता को पूर्णतया वैद्य रूप में एक चरम महत्त्व का अन्तर्राष्ट्रीय तौर पर एक अहम मुद्दा रहा है। पर्यावरण की सुरक्षा की आवश्यकता को पूर्णतया वैद्य रूप में एक चरम महत्त्व का अन्तर्राष्ट्रीय उद्देश्य कहा जा सकता है। आज पर्यावरण की सुरक्षा को सभी सभ्य राज्यों की सांझी सम्पति तथा सोच के रूप में स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इसी कारण आधुनिक समय में विश्व स्तरीय तथा सामूहिक प्रयासों के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा करना, एक प्रमुख कार्य–क्षेत्र बन चुका है। पर्यावरणवाद कोई स्वायत्त सिद्धांत नहीं है। यह अन्तर्विरोधों से घिरा है।
यह एक विचारधारात्मक आंदोलन है जो पश्चिमी राजनीति में 1970 के दशक में उभरा और धीरे–धीरे सम्पूर्ण विश्व में फैला। पर्यावरणवाद 'जीवन की गुणवत्ता' को 'आर्थिक समृद्धि' से ज्यादा ऊँचा स्थान देता है और प्राकृतिक संसाधनों, प्राकृतिक सौंदर्य, वातावरण की स्वच्छता तथा नगरों एवं उपनगरों के स्वरूप को कायम रखने पर बल देता है। इन सब उद्देश्यों को यह राजनीतिक कार्यक्रमों के मुद्दे बनाता है और इनके लिए उपयुक्त नीतियाँ और कायदे–कानून बनाने के लिए सरकारों पर दबाव डालता है। पर्यावरणवादी विश्व राजनीति के मौजूदा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, मानकीय सरंचनाओं के ढांचे को स्वीकारते हैं तथा उन सरंचनाओं के अंतर्गत पर्यावरणीय समस्याओं का सुधार/निदान की तलाश करते हैं।

मूल शब्दः सभ्य, पीढ़ी, अन्तर्विरोधों, विचारधारात्मक गुणवत्ता, आर्थिक संवृद्धि, निदान

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय राजनीति में मुद्दे तथा चुनौतियाँः– वर्तमान युग में वैश्विक पर्यावरणीय बदलाव या अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण राजनीति के दृष्टिगोचर पहलुओं से शायद अंतराष्ट्रीय संबंधों का कोई भी अध्ययन चाहे वह यथार्थवाद, नवयथार्थवाद, उदारवाद, उदार संस्थावाद, मार्क्सवाद तथा नारीवाद थे, कोई भी इस मुद्दे से अछूता नहीं रहा है। बल्कि, यह कहना उचित होगा कि पर्यावरणीय मुद्दों ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रभुत्त्वशाली उपागमों के सामने कुछ अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय मुद्दों के रूप में चुनौतियाँ रख दी हैं। यह सत्य है कि वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं के लिए प्रत्युत्तर देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में राज्य इसकी तुलना में विशेषाधिकृत स्थिति धारण करता है। राज्य तथा केन्द्रीय सरकारें सामान्य रूप से आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय गतिविधियों में प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण नहीं रखती। वे अपने क्षेत्रों के अंतर्गत कानून बनाने के लिए सम्प्रभु सत्ता रखते हैं तथा इस प्रकार उन्हें किसी भी पर्यावरणीय नियमों के क्रियान्वन करने तथा उन्हें विकसित करने के लिए मुख्य भूमिका निभानी चाहिए। इसके अतिरिक्त किसी हद तक पर्यावरणीय समस्याओं पर प्रत्युत्तर देने हेतु सहयोग के लिए अंतर्राष्ट्रीय एग्रीमेंट महत्त्वपूर्ण है, अन्तः राज्य कूटनीति को आगे आना चाहिए तथा फिर राज्य किन्हीं भी संधियों के लिए कानूनी पार्टी होंगे। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय समझौते तथा एग्रीमेंट के संबंध में भी गैर–राज्य अभिकर्ता केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त राज्य पर्यावरणीय समस्याओं के निदान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं या सत्तागुटों में फंस जाते हैं, तो नीति प्रक्रिया अक्सर महत्त्वपूर्ण पारराष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय आयाम अर्जित करती हैं, जो व्यवहार में वास्तविक रूप में राष्ट्रीय स्वायत्ता पर पाबंदी लगा सकती है। अंततः अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय समझौतो के क्रियान्वन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा पारराष्ट्रीय तथा घरेलू संगठनों को शामिल करना पड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय मुद्दों के अध्ययन द्वारा विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में तीसरा मुद्दा 'ज्ञान', शक्ति तथा हितो के संबंध है। हरित राजनीति में वैज्ञानिक या विशेषज्ञ का ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सावधानीयुक्त वैज्ञानिक निरीक्षण तथा पर्यावरण का प्रतिरूप सामान्य रूप से समस्याओं की पहचान करने तथा उनका निर्धारण करने के लिए एवं संभव प्रत्युत्तरों के बारें में विवादों की रूपरेखा के लिए आवश्यक है। एजेंडों को स्थापित करने में, शक्ति तथा प्रभाव के नमूने को प्रभावित करने में 'ज्ञान' सहायता करता है तथा मुख्य अभिकर्ताओं की प्राथमिकताओं तथा हितों के द्वारा निर्धारणों को आकार प्रदान करता है। विशेष रूप से समस्याओं, प्रभावों तथा प्रभावशाली प्रयुत्तरों के बारे में समझने योग्य वैज्ञानिक अनिश्चित्ता होती है। बहरहाल, वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों का समुदाय अपने सत्ता सूचक प्रभाव को बढ़ा सकता है, इसलिए अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय मुद्दे उन तरीकों को खोजने में महत्त्वपूर्ण क्षेत्र प्रदान करते हैं जिसमें शक्ति संबंध, हितों के नमूने, ज्ञान तथा सीखने की प्रक्रियाएं तथा निर्धारित परिणामों में महत्त्वपूर्ण वार्ताएं होती हैं। इनमें से एक या दो घटकों के संबंध में पर्यावरणीय मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय नीति विवादों के परिणामों की व्याख्या करने के प्रयास सामान्य रूप से निष्फल हो चुके हैं।

पर्यावरण पर संधियाँ एवं पर्यावरणीय सत्तागुटों का विकास

ओवेन ग्रीन के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में पर्यावरणीय मुद्दें पहली बार उन्नीसवीं शताब्दी में स्त्रोतों के प्रबंधन के लिए अंतर्राष्ट्रीय एग्रीमेंट के संबंध में उभरे। सन् 1948 में अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन बना। यह जहाजमालिकों के क्लब के रूप में अंतर्राष्ट्रीय जहाजरानी समुद्री यात्रा तथा सुरक्षा को बढ़ाने के लिए तथा इन्हें सुगम बनाने हेतु बना था। 1960 के दशक में, प्रदूषण तथा प्राकृतिक पर्यावरण के सरंक्षण के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय प्रयास विशेषतः विकसित देशों में विकसित होने शुरू हुए। 1960 के दशक में बढ़ी अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय चिंता के प्रत्युत्तर में 1972 में मानवीय पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन आयोजित हुआ जिसका उद्देश्य प्रदूषण तथा अन्य पर्यावरणीय समस्याओं के लिए एक ज्यादा समन्वयकारी उपागम को बढ़ावा देने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय ढांचे को स्थापित करना था। यह सम्मेलन स्कॉटहोम सम्मेलन कहा जाता है। जो अंतर्राष्ट्रीय

पर्यावरणीय राजनीति के विकास के लिए एक टर्निंग प्वाईंट था इसमें कुछ सिद्धांतों पर सहमति हुई तथा कुछ संस्थान एवं प्रोग्राम इस दिशा में स्थापित किए गए। लेकिन सम्मेलन में स्थापित धारणाओं एवं व्यवहारों पर विवाद अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय राजनीति से जुड़ा रहा जो अगले 30 साल से भी ज्यादा चलता रहा। 1970 तथा 1980 के दशक में दर्जनों अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय एग्रीमेंट तथा कार्यक्रमों को स्थापित किया गया।

ओजोन सत्तागुट का विकास एवं कार्यान्वन

ओजोन परत के क्षय को रोकने एवं उसके सरंक्षण के लिए मांट्रियल प्रोटोकॉल को 1987 में हस्ताक्षरित किया गया, जो इस सत्तागुट का मुख्य बिन्दु है। यह अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय सत्तागुटों के इतिहास में एक सफल परीक्षण माना जाता है। इसके हस्ताक्षरित होने से पहले ओजोन क्षय करने वाले मुख्य पदार्थों का वैश्विक उपभोग तथा उत्पादन तेजी से बढ़ रहा था। 1990 के दशक के मध्य इस प्रचलन में ठहराव आया तथा यह बिल्कुल विपरीत हो गया, बहुत से विकसित देशों ने क्लोरो–फ्लोरों कार्बन का उपभोग करना बंद कर दिया। इसके प्राकृतिक अवस्था में लौटने का अर्थ है कि इक्कीसवीं शताब्दी के पहले दशक के बाद ओजोन परत का क्षय इतना नहीं होगा या जारी नहीं रहेगा लेकिन उसके उपरांत यह उपेक्षा की गई है कि यह धीरे–धीरे 2060 तक यह उसी 1970 के स्तर तक पहुंच जाएगा। इसके अतिरिक्त 1990 के दशक के बीच में बहुपक्षीय फंड, प्रोजेक्टों के क्रियान्वन की समीक्षा के लिए प्रक्रियाओं को सत्यापित किया गया कि इन पदार्थों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण हो रहा है या नहीं। जबकि ओजोन सत्तागुट हर दो या तीन साल में बड़ी–बड़ी समीक्षाओं के साथ विकसित होते रहे तथा आगे आने वाले दशकों के लिए योजना बनाते रहे।

रियो सम्मेलन तथा उसके परिणाम

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सतत् विकास को विकसित करने एवं आगे बढ़ावा देने के संदर्भ में 1992 ई० में रियो में 'पृथ्वी सम्मेलन' करने का निर्णय लिया था। इसलिए रियो सम्मेलन का एजेंडा बहुत शीघ्रता से विकसित किया गया। 1980 के दशक के अंत में यह अंतर्राष्ट्रीय चिंता का विषय था कि 'ग्रीन हाऊस' गैसों का प्रभाव जैसे कि कार्बनडाइआक्साइड, मीथेन, क्लोरो–फ्लोरो कार्बन आदि पर्यावरण परिवर्तन का कारण बन रहे हैं तथा पृथ्वी पर ऊर्जा संतुलन को बिगाड़ रही है। 1992 में बहुत ही वृहद रूप में रियो सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें कि 150 राज्यों ने प्रतिनिधित्व किया तथा जिसमें 135 राज्याध्यक्ष शामिल थे। रियों में ही गैर–सरकारी संगठनों की अपनी स्वयं की भी बैठक हुई, लेकिन यह अतः सरकारी बैठक के तौर पर थी। इस बैठक को बहुत ज्यादा जनसाधारण ध्यानाकर्षण प्राप्त हुआ तथा एक बड़ी मीड़िया कवरेज भी मिली। 1992 के रिओ सम्मेलन को एक महान् उपलब्धि के रूप में माना गया। इसके वास्तविक प्रभाव का निर्णय इस बात से किया जा सकता है कि पृथ्वी सम्मेलन एग्रीमेंटों तथा कनवेंशनों को कैसे पूर्ण रूप से विकसित किया गया तथा उनका किस प्रकार से क्रियान्वन किया गया। इस प्रकार कनवेशनों के प्रभाव में आने से पहले ऐसे मुद्दों पर शीघ्रता से उनका निवारण करने की तथा प्रत्येक एग्रीमेंट परवार्ता करने के लिए अन्तः सरकारी वार्ता कमेटी की जिम्मेदारी थी।

निष्कर्ष

पर्यावरणवाद का सैद्धांतिक आधार 'सामाजिक न्याय' हैं इसके पैरवीकार यह तर्क तर्क देते हैं कि धरती किसी एक की निजी सम्पत्ति नहीं है। यह हमें पूर्वजों से उत्तराधिकार में मिली, बल्कि यह हमारे पास भावी पीढ़ियों की धरोहर है। अतः हम वर्तमान प्राकृति संसाधनों को सुरक्षित रखने के दायित्व में बंधे हैं। अतः पर्यावरण की रक्षा के लिए सजग होना हमारा परम कर्तव्य हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Mathew Paterson, 'Green Politics', in Scott Burchit and Andrew linklater, Theories of International Relations (2nd edition), New York, Macmillion Press, 2001, 277-78.
2. Owen Greene, 'Environment Issues' in John Baylis and Steve Smith (eds.), The Globalization of World Politics, 3rd edition, 'New York, Oxford University Press. 2005, 457-62. and see also G. Hardin, The Tragedy of Commons', Science,1998:162:1243-48.
3. Dryzek J. The Politics of the Earth: Environmental Discourses (Oxford, 1997).
4. Daurvergne P (ed.) 'Handbook of Global Environmental Politics, (Chettenham, 2005).
5. Berry J, Eckersely R (eds.), The State and the Global Ecological Crisis (Cambridge, MIT Press, 2005).
6. Barnett J. the meaning of Environmental Security: Ecological Politics and Policy in the New Security Era (London, 2001).